

# डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 24, न्यायाधीश 1-3

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 24 है, न्यायाधीश 1-3, ओथनील, एहुद और शामगर।

पुनः नमस्कार, डॉ. डेविड हॉवर्ड, अब जजों की पुस्तक को देख रहे हैं।

हमने पहले जजों की पुस्तक के परिचयात्मक मुद्दों को देखा है और अब हम पुस्तक पर विचार शुरू करने के लिए तैयार हैं। इसलिए मैंने उल्लेख किया है कि आपके पास न्यायाधीशों की पुस्तक की एक रूपरेखा उपलब्ध होनी चाहिए जो मैंने की है और इसलिए इसे संदर्भित करने के लिए आपके पास इसे रखने से आपको मदद मिल सकती है। और बस आपको याद दिलाने के लिए, मैंने उस रूपरेखा को एक ऐसे विषय के इर्द-गिर्द व्यवस्थित किया है जो मुझे लगता है कि वह विषय है जो पुस्तक में व्याप्त है, अर्थात् इज़राइल का धर्मत्याग।

और इसलिए मैंने परिचयात्मक टिप्पणियों में उल्लेख किया है कि पुस्तक में दो परिचय हैं। अध्याय एक श्लोक एक से दो पाँच और फिर दो छः से तीन छः। और मैं उस खंड को इज़राइल के धर्मत्याग की जड़ें कहूंगा जो पुस्तक के बाकी हिस्सों में प्रकट होती है और दिखाई देती है, लेकिन इसका परिचय यहां दिया गया है।

और फिर अध्याय तीन, श्लोक सात में, और 16 के अंत तक, हमारे पास वह है जो मैं इज़राइल के धर्मत्याग के लिए एक नीचे की ओर सर्पिल के रूप में देखूंगा। तो, यहां हम देखेंगे कि, विशेष रूप से अध्याय दो और तीन में, कि अवधि के दौरान यह चक्र दोहराया जाता है। और ये सिलसिला यूं ही नहीं चलता।

इतिहास खुद को समान रूप में नहीं दोहरा रहा है, बल्कि यह एक नीचे की ओर जाने वाला चक्र है और जैसे-जैसे नीचे जाती हैं, बदतर और बदतर होती जाती हैं। और दुख की बात है कि ऐसा लगता है कि न्यायाधीश स्वयं कभी-कभी समस्या का भी उतना ही हिस्सा होते हैं जितना कि समाधान का। तो, यह खत्म हो जाता है और फिर आपके पास किताब के अंत में वे घिनौनी कहानियाँ होती हैं।

इसीलिए किताब यह कहते हुए समाप्त होती है, आप जानते हैं, उन दिनों इस्राएल में कोई राजा नहीं था। हर किसी ने वही किया जो उनकी नज़र में सही था या जैसा उन्हें ठीक लगा। और इसके पीछे का दूसरा पहलू यह है कि यदि इसराइल में कोई धर्मात्मा राजा होता, तो हालात इतने बुरे नहीं होते।

लोग प्रभु की दृष्टि में सही कार्य कर रहे हैं। तो, आइए अध्याय एक को देखकर शुरुआत करें। और धर्मत्याग की प्रस्तावना हम अध्याय एक से अध्याय दो, श्लोक पाँच में पाते हैं।

और यहाँ जोशुआ की मृत्यु के बाद हमारी कुछ सैन्य गतिविधियाँ जारी हैं। और यह एक तरह से दो अलग-अलग खंडों में बताया गया है। छंद एक से 21 हमें कनान की निरंतर विजय के बारे में बताते हैं, एक तरह की अधूरी विजय।

फिर 22 से 36, और फिर अध्याय दो में, हमें कुछ विशिष्ट जनजातियों के बारे में और बताएं जो ऐसा नहीं कर रहे थे। तो आइए पहले खंड को देखकर शुरुआत करें। अध्याय एक, श्लोक एक से 21 तक.

और यह कहता है कि यहोशू की मृत्यु के बाद, अध्याय एक, पद एक, इस्राएल के लोगों ने यहोवा से पूछा, कनानियों के विरुद्ध लड़ने के लिये हमारी ओर से कौन चढ़ाई करेगा? और परमेश्वर ने कहा, यहूदा चढ़ाई करेगा। मैंने परिचयात्मक टिप्पणियों में उल्लेख किया है कि हमारे यहां न्यायाधीशों की शुरुआत में नामित कोई स्पष्ट नेता नहीं है जैसा कि जोशुआ की पुस्तक में था। और यहोशू के अंत में, दुख की बात है कि हमें बताया गया है कि इस्राएल के लोग यहोशू के दिनों तक और उसके जीवित बुजुर्गों के दिनों तक प्रभु का अनुसरण करते रहे, लेकिन आगे नहीं।

और यह शुरू होता है, जो यहां अराजकता की ओर नीचे की ओर जाने का पूर्वाभास देता है। इसलिये यहूदा ने यहां के देश में जाने में अगुवाई करने का निश्चय किया, और शिमोन, उसके भाई, और शिमोन और यहूदा, को अपने क्षेत्र में ले लिया। और यहोशू की पुस्तक में भूमि वितरण सूची में, शिमोन की विरासत केवल शहरों की है।

ऐसा नहीं है, शिमोन के लिए कोई सीमा सूची नहीं है। और शिमोन का, ऐसा प्रतीत होता है कि शिमोन का गोत्र यहूदा के गोत्र में समाहित हो गया है। इसलिए वे दोनों एक साथ जाते हैं और वे यरूशलेम के विरुद्ध लड़ते हैं।

और श्लोक आठ हमें बताता है कि उन्होंने इस पर कब्ज़ा कर लिया और इसे तलवार से मारा, और शहर को आग लगा दी। इसके बाद, मुझे क्षमा करें, मुझे कुछ अन्य टिप्पणियाँ करने दीजिए। उन्होंने अदोनीजेदेक, अदोनिबेजेक नामक राजा से युद्ध किया था।

और इन कनानी नगरों में से प्रत्येक का अपना छोटा राजा था। तो, राजा, इनमें से राजा, कनान में वास्तव में अधिक राजा थे, मैं कहूंगा, आसपास के क्षेत्र के एक शहर के राजा। मिस्र में फिरौन या मेसोपोटामिया, सीरिया और बेबीलोन के राजाओं जैसे बड़े राजा नहीं थे, लेकिन वे अधिक स्थानीय राजा या शायद लगभग आदिवासी प्रमुख थे।

जैसा कि मैंने कहा, श्लोक आठ में फिर से यरूशलेम का उल्लेख किया गया है, और यदि आप यहोशू की पुस्तक में वापस जाते हैं, तो हम पाते हैं कि यरूशलेम का उल्लेख यहूदा और बिन्यामीन दोनों की सीमा पर किया गया है। अध्याय 15, श्लोक 63 में, यहूदा पर अध्याय के अंत में, यह कहा गया है कि यहूदा यरूशलेम के निवासियों को बाहर निकालने में सक्षम नहीं था। और फिर न्यायाधीशों के अध्याय एक, श्लोक 21 में, हम यहां पाते हैं कि बिन्यामीन के लोगों ने यरूशलेम में रहने वाले यबूसियों को बाहर नहीं निकाला।

इस प्रकार यबूसी आज के दिन तक यरूशलेम में बिन्यामीनियोंके संग रहते आए हैं। तो ऐसा प्रतीत होता है कि सीमा पर कोई शहर रहा होगा। हम बाद में अध्याय में देखेंगे, 17 के बाद के अध्यायों में से एक, कि इस समय यरूशलेम को वास्तव में एक विदेशी शहर माना जाता था।

इसे इस्राएल का शहर नहीं माना जाता था और डेविड के दिनों तक हमें यरूशलेम पर वास्तव में कब्ज़ा नहीं हुआ था। दाऊद ने यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया और उसे अपना बना लिया। उन दिनों यबूसियों के लिए इसे यबूस कहा जाता था।

डेविड, दूसरे सैमुअल अध्याय पांच में, शहर पर कब्ज़ा करता है और इसे एक इज़राइली शहर बनाता है। तो यहाँ, श्लोक आठ में यरूशलेम का पूर्ण विनाश एक तरह से अस्थायी प्रतीत होगा क्योंकि यहोशू का कहना है कि वे ऐसा करने में सक्षम नहीं थे। हम यहां श्लोक 21 में पढ़ते हैं कि बिन्यामीन ऐसा नहीं कर सका।

तो, यह एक ऐसा शहर है जो एक तरह से परिवर्तनशील था, एक ऐसा शहर जो निश्चित रूप से, इज़राइल के इतिहास में बहुत बाद में, इज़राइल के जीवन के केंद्र और एक अर्थ में, भगवान के राज्य की राजधानी के रूप में बहुत प्रमुखता से सामने आया। लेकिन यहाँ, यह अभी तक नहीं है। निम्नलिखित श्लोक 11 में, हमारे पास कालेब और विशेष रूप से उसकी बेटी की कहानी है।

किर्यत्सेपेर के खिलाफ जाएगा और उस पर कब्ज़ा करेगा। और इसलिए, ओथनील आगे बढ़ता है और ऐसा करता है। यह वास्तव में लगभग शब्द दर शब्द दोहराता है, यह छोटा खंड जोशुआ अध्याय 15, श्लोक 15 से 19 में उनकी और उनकी बेटी की छोटी सी कहानी को लगभग शब्द दर शब्द दोहराता है।

तो, यह जोशुआ की किताब का एक दोहराव अंश है क्योंकि हम कुछ अन्य अंश भी देखते हैं। तो, कालेब की बेटी साहसी है और वह कहती है, पद 15 में आशीर्वाद मांगो। और साथ ही, वह पानी के झरने भी चाहती है।

उसे और उसके परिवार के विकास के लिए पानी के कुछ स्रोतों की आवश्यकता थी। और इसलिए, कालेब पद 15 में ऐसा करता है। इसके बाद, आपके पास केनी मूसा के ससुर के वंशज हैं जो पाम शहर के लोगों के साथ यहूदा के जंगल में गए थे।

निर्गमन की पुस्तक में मूसा के ससुर जेथ्रो थे और यहां उनके वंशज, इस्राएली और केनी जंगल में मित्रवत रहे हैं। हम उनके बारे में गिनती अध्याय 10 में पढ़ते हैं। यहाँ सहयोग मूसा के उन शब्दों को पूरा करता है जो उसने गिनती 10 में कहे थे जब उसने केनियों से इस्राएलियों के बारे में बात करते हुए कहा था, हम तुम्हारा भला करेंगे।

और पाम्स शहर, यहां जेरिको के लिए एक और शब्द है। तो, वे जॉर्डन नदी के पास घाटी में हैं। इसलिए, यहूदा ने गाजा और कुछ अन्य क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया।

ये भूमध्यसागरीय तट के साथ दक्षिण पश्चिम में हैं। ये वे क्षेत्र हैं जिन्हें बाद में फ़िलिस्ती क्षेत्र के रूप में जाना गया। और यहोवा यहूदा के साथ है, पद 19, परन्तु वह मैदान के निवासियों को पूरी तरह से बाहर निकालने में असमर्थ था क्योंकि उनके पास लोहे के रथ थे।

अब इस बारे में सैमुअल के एक अंश को देखने का अच्छा समय हो सकता है। तो, 1 शमूएल अध्याय 13 की ओर मुड़ें। हम देखेंगे और इस प्रकार के हथियारों के बारे में एक और अंतर्दृष्टि प्राप्त करेंगे।

1 शमूएल 13, आयत 19 और निम्नलिखित। यह अब कुछ सौ साल बाद शमूएल, डेविड और शाऊल के समय में है, और विशेष रूप से यहाँ यह शाऊल के शासनकाल के दौरान है। लेकिन 1 शमूएल 13, श्लोक 19 से 22 हमें इस बारे में एक और अंतर्दृष्टि देता है।

तो आइए मैं इसे पढ़ता हूँ, और कुछ टिप्पणियाँ करता हूँ। इस प्रकार यह कहता है, कि अब इस्राएल के सारे देश में कोई लोहार न पाया गया। क्योंकि पलिशितियों ने कहा, ऐसा न हो कि इब्री तलवार वा भाले बना लें।

पद 20, परन्तु इस्राएलियों में से हर एक अपने हल, अपनी हांथी, अपनी कुल्हाड़ी, या हंसुआ पर धार चढ़ाने के लिये पलिशितियों के पास गया। और यह शुल्क हल के फालों और मूठों के लिये दो तिहाई शेकेल और कुल्हाड़ियों पर धार चढ़ाने और बकरियों को बैठाने के लिये एक तिहाई शेकेल था। तो, यहाँ मुद्दा यह है कि इज़राइल के पास लोहे की तकनीक तक पहुंच नहीं है, और यह पलिशितियों के हाथों में एकाधिकार प्रतीत होता है।

उनके पूर्वज, जिनके बारे में हम यहाँ न्यायाधीशों की पुस्तक अध्याय एक में पढ़ते हैं। अंतिम पद, पद 22, इस प्रकार युद्ध के दिन, शाऊल और योनातान के साथ के लोगों में से किसी के हाथ में न तो तलवार थी और न ही भाला, परन्तु वे शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास थे। और फिर वे पलिशितियों से युद्ध करने को निकले।

यहाँ एक बात स्पष्ट करने के लिए, यदि हमारे पास कनान भूमि की तस्वीर है, तो अधिकांश भूमि के बीच एक ऊंची केंद्रीय पर्वत श्रृंखला है। जेरिको घाटी में नीचे है। पृथ्वी पर सबसे निचला हिस्सा मृत सागर है, जो समुद्र तल से लगभग 1,200 फीट नीचे है, और जेरिको उस घाटी में है, इसलिए यह समुद्र तल से नीचे है।

यरूशलेम तक पहुंचने के लिए आपको बहुत खड़ी चढ़ाई चढ़नी होगी, जो लगभग यहीं होगा, और वहाँ वह पहाड़ी है, और यह पहाड़ी देश है, और तब पलिशती दक्षिण पश्चिम में तट के किनारे रहते थे, और वहाँ जमीन समतल थी। और इसलिए, यह सोचना तर्कसंगत है कि रथ बहुत आसानी से तट पर ऊपर और नीचे जा सकते थे, लेकिन रथ पहाड़ी देश में नहीं जा सकते थे, जिससे हमें इस बात की जानकारी मिलती है कि इस्राएलियों के पास रथ क्यों नहीं थे। बेशक, पलिशितियों के पास लोहे के हथियारों का एकाधिकार था। इसलिए, यदि हम यहोशू 1, न्यायाधीश 1, अंतिम खंड, पहले खंड की अंतिम कविता पर वापस आते हैं, तो हमें बिन्यामीनियों की

यरूशलेम से यबूसियों को बाहर न निकालने में विफलता के बारे में बताता है, और इसलिए यबूसी लोग उनके साथ रहते हैं बिन्यामीन के लोग आज तक यरूशलेम में हैं।

हमने पहले चर्चा में पुस्तक के लेखन की तिथि-निर्धारण का उल्लेख किया था। डेविड के समय तक, यबूसियों को बाहर निकाल दिया गया था, इसलिए संपूर्ण पुस्तक, या निश्चित रूप से पुस्तक का यह भाग, डेविड से पहले के समय में प्रतिबिंबित हुआ होगा, जो लगभग 1000 ईसा पूर्व है। यह शायद 1350 के करीब होगा या कहीं-कहीं, 300 से अधिक वर्ष पहले।

छंद 22 और उसके बाद में, हमारे पास पुस्तक का एक और खंड है जिसे हम अधूरी विजय कह सकते हैं, और ये अधूरी विजय आगामी आपदा का पूर्वाभास देती हैं। इसकी शुरुआत यहां से होती है कि बिन्यामीनियों ने यबूसियों को बाहर नहीं निकाला। श्लोक 22 से 26 यूसुफ के गोत्रों को दर्शाते हैं, संभवतः एप्रैम, मनश्शे, या निश्चित रूप से एप्रैम।

श्लोक 27 में मनश्शे का उल्लेख है, लेकिन कम से कम यूसुफ के पुत्र एप्रैम, बेतेल के विरुद्ध चढ़ गए, जो यरूशलेम से थोड़ा उत्तर में है। लंबी कहानी है, वहां वे बेथेल पर कब्जा करने में सक्षम थे, और यह इस खंड में सफलता है। बाकी, इस अध्याय में इसके बाद आधा दर्जन छोटी कहानियाँ हैं जो इज़राइल के लोगों द्वारा अपने निवासियों को बाहर निकालने में विफलताओं को दर्शाती हैं।

इसलिए, अध्याय के शेष भाग में, पद 27 में, मनश्शे ने बेत-शान और उसके गांवों और उनके आसपास के सभी स्थानों के निवासियों को बाहर नहीं निकाला। पद 27 के अंत में कनानवासी उस देश में रहने पर अड़े रहे और उन्होंने कनानियों से जबरन श्रम कराया लेकिन उन्हें बाहर नहीं निकाला। पद 29 में, एप्रैम ने वही काम नहीं किया।

आयत 30 में, जबूलून ने वही काम नहीं किया। पद 31, आशेर। पद 33, नप्ताली।

और श्लोक 34, दानियों। एमोरियों ने दान के लोगों को पहाड़ी देश में वापस धकेल दिया क्योंकि उन्होंने उन्हें मैदान में आने की अनुमति नहीं दी। हम किताब में बाद में देखेंगे कि दान जनजाति को समुद्र के पास विरासत मिली थी, लेकिन कनानियों के विरोध के कारण उन्हें उत्तर की ओर पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ा, और किताब में बाद में इसकी अधिक विस्तृत चर्चा है।

तो, यह जोशुआ की किताब के लिए एक अशुभ शुरुआत है, फिट और स्टार्ट को देखते हुए, लेकिन ज्यादातर, मुझे लगता है कि आप कहेंगे कि फिट बैठता है, ज्यादातर उस काम को पूरा करने में विफलता है जो जोशुआ की किताब में पहले ही किया जाना चाहिए था। तो, यह उनका बहुत बड़ा श्रेय नहीं है। अध्याय 2, श्लोक 1 से 5 प्रभु के दूत के बारे में एक छोटी सी कहानी है जो आता है और लोगों से बात करता है और उन्हें प्रोत्साहित करता है, बहुत सी बातें दोहराता है जो पेंटाटेच और जोशुआ की किताब में भी कही गई हैं।

तो, वह आता है और समीक्षा करता है कि भगवान ने उनके लिए क्या किया है। पद 1, मैं तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाया, और उस देश में पहुंचाऊंगा जिसे देने की मैं ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई थी। तो, वादा निभाने वाले परमेश्वर का विचार हमने यहोशू में देखा।

तू उन से वाचा न बान्धना, और उनकी वेदियोंको तोड़ देना। तो, यह निर्देश दिए गए हैं, लेकिन स्वर्गदूत का अभियोग यह है कि तुमने मेरी बात नहीं मानी है, और इसलिए तुमने क्या किया है? और इसलिए, प्रभु का दूत उन्हें एक गंभीर भविष्यवाणी देता है। श्लोक 3, वादा करो, मुझे लगता है कि हम कहेंगे, मैं उन्हें आपके सामने बाहर नहीं निकालूंगा।

तेरी ओर कांटे होंगे, और देवता तेरे लिथे फन्दा ठहरेंगे। और वे शब्द हैं, लगभग शब्द दर शब्द, यहोशू अध्याय 23 से। यदि आप इसे तुरंत देखना चाहते हैं, यहोशू 23, श्लोक 13, कहता है, भगवान कहते हैं, यहोशू भगवान की ओर से कहता है, निश्चित रूप से जान लें कि प्रभु आपका भगवान है और इन जातियों को तेरे साम्हने से फिर न निकालूंगा, परन्तु वे तेरे लिथे जाल, और तेरे लिथे कोड़े, और तेरी आंखोंमें कांटे ठहरेंगे, यहां तक कि तू इस सारे अच्छे देश में से नाश हो जाएगा।

यदि आप उसकी ओर नहीं मुड़ते हैं। और इस बिंदु से, न्यायाधीशों की पुस्तक में, यह स्पष्ट है कि ऐसा नहीं हो रहा है। तो, प्रभु का दूत उन शब्दों को दोहराता है।

और यह उनका श्रेय है कि लोगों ने जवाब दिया, कठोर दिलों से नहीं, बल्कि उनके दिलों में किसी प्रकार की स्पष्ट नरमी, पश्चाताप के साथ। वे चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगे। वे उस स्थान का नाम बोचिम [न्यायाधीश] बताते हैं। 2:5], जिसका अर्थ है रोने वाले लोग, रोने वाले।

और उन्होंने वहां यहोवा के लिये बलिदान किया। इसलिए, वे ऐसी चीज़ में संलग्न हैं जिसकी हम सराहना कर सकते हैं। लेकिन यह सब कुछ कहता है।

तब हमें यह नहीं बताया गया कि भगवान ने कहा, ठीक है, सब कुछ ठीक है, और यह बहुत अलग होगा। तो, यह पुस्तक का पहला परिचय समाप्त करता है, जो एक तरह से सभी धर्मत्याग की प्रस्तावना है जो बाद में प्रकट होने के लिए तैयार है। अध्याय 2, श्लोक 6 में अब, अध्याय 3, श्लोक 6 के माध्यम से, पुस्तक का एक दूसरा परिचय है।

यह एक अलग तरह का है। उसमें, लेखक एक तरह से पीछे हट गया है और एक जनजाति के ऐसा या वैसा करने की विशिष्टताओं का पता नहीं लगा रहा है। यह अधिक सामान्यीकृत है।

यह एक तरह से इस बात का व्यापक विवरण देने जैसा है कि इस अवधि में क्या हो रहा होगा। यहां यह नहीं कहा जा रहा है कि किसने यह किया और किसने वह किया या किसने यह नहीं किया, किसने वह नहीं किया। तो, उस अर्थ में, यह एक तरह का अधिक सिंहावलोकन है, जो आने वाला है उसका एक सामान्यीकृत पूर्वावलोकन।

और यह पाप में गिरने और किसी अन्य देश के अधीन गुलामी में डालने और फिर भगवान को पुकारने और फिर भगवान द्वारा उन्हें बचाने आदि के चक्र के बारे में बात करता है। तो, इस अगले भाग में यही हो रहा है। तो, इसकी शुरुआत जोशुआ की किताब, अध्याय 2, छंद 6 से 10 के फ्लैशबैक से होती है, जो लगभग यहोशू अध्याय 24, छंद 28 से 31 के शब्द दर शब्द हैं।

जोशुआ की पुस्तक, जोशुआ पर हमारे व्याख्यान में, हमने यहोशू की मृत्यु सूचना का हिस्सा होने के बारे में बात की। और यहाँ, यह हमें पुस्तक के दूसरे परिचय की ओर बढ़ने में मदद करता है। यहोशू पहले ही मर चुका था, अध्याय 1, पद 1। यहोशू दोबारा नहीं मरता है, बल्कि यह जानकारी की पुनरावृत्ति है जो अब सामान्यीकृत धर्मत्याग विवरण का अधिक परिचय देती है।

यहाँ जोशुआ का चित्रित चित्र यहोशू की पुस्तक में बहुत सकारात्मक है, जो कहता है कि लोग यहोशू के दिनों में और उनके पुरनियों के दिनों में प्रभु का अनुसरण करते थे। लेकिन यहाँ, बात थोड़ी आगे बढ़ जाती है। न्यायियों अध्याय 2 के पद 10 में, वह सारी पीढ़ी भी अपने-अपने पुरखाओं के पास इकट्ठी हो गई, और उनके बाद एक और पीढ़ी उत्पन्न हुई जो न तो प्रभु को जानती थी और न उस काम को जानती थी जो उसने इस्राएल के लिए किया था।

तो, हमने जो समझा, यदि आपने यहोशू पर व्याख्यान देखा है या यहोशू के अंत को ध्यान से देखा है, तो क्या निहित प्रतीत होता है, अर्थात् यहोशू का नेतृत्व एक और ईश्वरीय नेता को नामित करने से कम हो गया और इस्राएलियों ने पीढ़ियों तक इसे जारी रखा। भगवान। ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर के प्रति प्रतिबद्धता केवल कुछ वर्षों तक जीवित रही, शायद यहोशू की मृत्यु के कुछ दशकों बाद। और यहाँ, यह इसे और अधिक स्पष्ट करता है, कहता है कि एक और पीढ़ी उत्पन्न हुई जो प्रभु को या उस कार्य को नहीं जानती थी जो उसने इस्राएल के लिए किया था।

तो, यह फिर से न्यायाधीशों की पुस्तक में इस प्रकट, उजागर धर्मत्याग के लिए मंच तैयार करता है। तो, यह खंड, छंद 6 से 10, जो हम जोशुआ 24 में पाते हैं उसका दोहराव है, लेकिन यह अपने स्वयं के प्रासंगिक विवरण भी जोड़ता है जो न्यायाधीशों की पुस्तक की कहानी को आगे बढ़ाने में मदद करता है। श्लोक 11 से 23 में, दूसरे शब्दों में, 11 से अध्याय के अंत तक, यह इस आवर्ती चक्र में प्रकट होता है।

और चक्र अनिवार्य रूप से यह है कि इस्राएल पाप में गिर गया और भगवान ने उन्हें इस या उस दुश्मन के हाथ में दे दिया, और फिर लोग पीड़ित हुए और उन्होंने प्रभु को पुकारा। प्रभु ने अगले न्यायाधीश को खड़ा किया, उन्हें बचाया, और फिर भूमि को कई वर्षों तक आराम मिला। तो, एक स्मरणीय उपकरण, शायद, आपकी मदद करेगा।

जैसे ही वे पाप में गिरे, उन्हें दासता में रखा गया। लोगों ने प्रार्थना में परमेश्वर को पुकारा। प्रभु ने उद्धार या छुटकारा भेजा, और फिर सब्त का विश्राम था।

इसलिए, यदि आपको s पसंद है, तो आपको यह याद दिलाया जा सकता है। यह एक प्रकार का चक्र है, फिर इसके बाद, यह वापस उसी पर आता है, और यह चलता रहता है। अब, उस पैटर्न को विशेष रूप से उस तरह से प्रतिध्वनित नहीं किया जाता है जिस तरह से कहानियों को बाद में बताया जाता है, लेकिन इस खंड में, इसे इस तरह प्रस्तुत किया जाता है, और हम देखते हैं कि यही पृष्ठभूमि है, यही संरचना है, यही कहानियों के पीछे की रीढ़ है उनका पीछा किया।

तो, बस एक स्थान पर कूदने के लिए, लोगों द्वारा प्रभु को पुकारने के बाद, याद रखें, शुरुआत में ध्यान दें, यह सिर्फ इतना कहता है, वे अन्य देवताओं के पीछे चले गए, श्लोक 12, उन्होंने प्रभु को

त्याग दिया, और उन्होंने बाल देवताओं की सेवा की और अष्टारोत, पद 13 में, इस प्रकार परमेश्वर का कोप उन पर भड़क उठा, और उस ने उनकी लूट उनको दे दी, और वे सफल न हुए। तो, तब वे भयानक संकट में थे, श्लोक 15 का अंत, और इसलिए प्रभु ने न्यायाधीशों को खड़ा किया, श्लोक 16, प्रभु न्यायाधीशों के साथ थे, श्लोक 18, और, लेकिन, श्लोक 19, लेकिन जब भी न्यायाधीश मर गया, वे बदल गए और अपने पिताओं की तुलना में अधिक भ्रष्ट थे, अन्य देवताओं के पीछे जाते थे, उनकी सेवा करते थे और उनके सामने झुकते थे, इसलिए वे अधिक भ्रष्ट थे, इस तरह की मदद से नीचे की ओर जाने वाली सर्पिल को मजबूत किया गया जिसके बारे में हमने बात की है, चीजें बदतर और बदतर होती गईं, और भगवान के पास बस इतना ही था। पुस्तक के इस दूसरे परिचय का अंत अध्याय 3, छंद 1 से 5, 1 से 6 में है, क्षमा करें, और यह थोड़ा अलग कोण से आता है, और भगवान द्वारा इन चीजों को करने और उन्हें देने के बारे में बात करता है इज़राइल का परीक्षण करने के लिए दुश्मनों के हाथ।

यह लगभग ऐसा लगता है जैसे यह भगवान ही था जिसने उन्हें दूसरों के उत्पीड़न के तहत रखा था, इन निर्दोष इस्राएलियों की तरह और भगवान, आप जानते हैं, एक धमकाने वाले के रूप में, उन्हें इसके तहत रखा था, लेकिन मुझे लगता है कि मुद्दा यह है, मेरा मतलब है, अनुच्छेद के पहले भागों में यह स्पष्ट है कि यह उनका अपना पाप है जो उन्हें इस बिंदु तक लाया है, और परीक्षा यह है कि भगवान यह देखना चाहते हैं कि वे वफादार बने रहेंगे या नहीं, और लगातार वे परीक्षा में असफल होते रहे हैं, और यह अध्याय 3, श्लोक 1 से 6 का मुद्दा है। श्लोक 5 में विभिन्न लोगों का उल्लेख है, इसलिए इस्राएल के लोग कनानियों, हित्तियों, एमोरी, परिजियों, हिवियों और यबूसियों के बीच रहते थे, और उनकी बेटियों को उन्होंने अपने पास रख लिया पत्नियाँ, अपनी बेटियाँ उन्होंने अपने बेटों को दे दीं, इसलिए यह अंतर्विवाह है, और उन्होंने देवताओं की सेवा की, इसलिए स्पष्ट रूप से आगे-पीछे और भगवान से विमुख होना यहाँ प्रकट हो रहा है। हमने इस अवधि के साथ-साथ अन्य अवधियों में समकालिकता के बारे में थोड़ा अलग खंड दर्ज किया है, और सवाल पूछते हैं, ऐसा क्यों था कि इज़राइल लगातार भगवान से दूर चला गया, और इसका प्रतिफल क्या था, इनाम क्या था, क्यों क्या उन्होंने ऐसा किया, ऐसा करने के लिए उन्हें क्या प्रोत्साहन मिला? हमने सेक्स, पैसे और साथियों के दबाव के बारे में बात की और हमें इसके पीछे ये सभी चीजें नज़र आईं। हम उस सब पर फिर से गौर करेंगे, लेकिन मैं आपसे उस वीडियो क्लिप की समीक्षा करने का आग्रह करता हूँ जहाँ हम इसके बारे में बात करते हैं क्योंकि ऐसा लगता है कि, बहुत मजबूत प्रोत्साहन या मजबूत करुणा थी, इसे इस तरह से कहें, दूर जाने के लिए, और हम ऐसा बार-बार घटित होते हुए देखते हैं।

तो, अध्याय 3, श्लोक 7 से शुरू करते हुए, हमारे पास सभी न्यायाधीशों के चक्र की शुरुआत है, और एक दर्जन न्यायाधीश हैं, जिनकी कहानियाँ चल रही हैं। हमने संक्षेप में परिचय का उल्लेख किया है, कि प्रमुख न्यायाधीश और छोटे न्यायाधीश हैं, और 12 न्यायाधीशों में से, हम शायद उनमें से सात को प्रमुख न्यायाधीश के रूप में वर्णित कर सकते हैं, और उनमें से पांच को छोटे न्यायाधीश के रूप में वर्णित कर सकते हैं। छोटे वे हैं जिनमें हम सिर्फ उनका नाम सीखते हैं, और केवल वहाँ जहाँ वे निर्णय लेते हैं, शायद कितने साल, और इसके बारे में, एक या दो छंद।

उनमें से प्रमुख वे हैं जिनमें, आप जानते हैं, हमारे पास अधिक कथानक हैं। ओथनील, पहला, अध्याय 3, श्लोक 7 से 11, प्रमुख न्यायाधीशों में से एक होगा। अब पुस्तक में बाद में, हमारे पास न्यायाधीशों की कुछ कहानियाँ विस्तारित अध्यायों में बताई गई हैं।

हमारे पास अध्याय 6 से 8 में गिदोन, अध्याय 11 में यिप्तह, और अध्याय 13 से 16 में सैमसन है, लेकिन, ओत्नीएल केवल पांच छंदों में है, लेकिन फिर भी वह इस अर्थ में एक प्रमुख न्यायाधीश है कि हमारे पास उसके बारे में एक कहानी है, हम उन युद्धों के बारे में जानें जिनमें वह शामिल हुआ और उसने अपने समय में, देश के अपने हिस्से में इसराइल को कैसे बचाया और बचाया। एक पैटर्न जो हमें इन प्रमुख न्यायाधीशों की कहानियों में मिलता है, वह यह है कि लगभग हर कोई इसराइल के प्रभु की नज़र में बुरा करने के बारे में एक बयान से शुरू होता है। अतः अध्याय 3, पद 7, इस्राएल के लोगों ने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था।

अध्याय 3, पद 12, इस्राएल के लोगों ने फिर वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। अध्याय 4, पद 1, इस्राएल के लोगों ने फिर वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। अध्याय 6, पद 1, इस्राएल के लोगों ने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था।

हम अध्याय 10, श्लोक 6 में देखते हैं कि जिन लोगों ने प्रभु के पक्ष में बुरा काम किया, और हम अध्याय 13 में भी वही बात फिर से देखते हैं। तो, लगभग सभी प्रमुख न्यायाधीशों की कहानियाँ, हमारे पास प्रस्तावना के रूप में हैं, और यह चक्र की शुरुआत के बारे में अध्याय दो में सामान्यीकरण कथनों को प्रतिध्वनित करती है। फिर बाकी सब कुछ उससे निकला, भगवान ने उन्हें अगले दुश्मन के हाथ में दे दिया।

तो ओत्नीएल वह है, पहला, श्लोक सात हमें बताता है कि लोगों ने बुराई की, लेकिन वे प्रभु को भूल गए, और उन्होंने बाल देवताओं और अशेरोत, अशेरा देवताओं की पूजा की। हमने कनानियों के धर्म का उल्लेख किया है, और सर्वोच्च देवता एल था, लेकिन वह एक तरह से दूर का व्यक्ति था, सीमांत था। उसकी पत्नी अशेरा थी, बाल मुख्य देवता थे, और उसकी पत्नी को कभी-कभी अशेरोथ के रूप में देखा जाता है, लेकिन कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि अशेरा भी उसकी पत्नी थी, और प्रवाह चार्ट और प्राचीन राष्ट्रों के इन देवताओं की संरचना में एक प्रकार की तरलता है। .

शायद यहां इसके बारे में एक शब्द कहें। हमने पहले जोशुआ व्याख्यानों में कुछ संदर्भों का उल्लेख किया है जहां प्राचीन समाजों में देवी-देवताओं के चार स्तर प्रतीत होते हैं। उच्चतम देवताओं का शीर्ष स्तर, बहुत छोटा मुट्ठी भर।

प्रकृति के विभिन्न हिस्सों, पहाड़ों, पहाड़ियों, समुद्र, नदियों, इत्यादि के देवताओं का अगला स्तर। अगला भाग, विभिन्न स्थानों के देवता, पोर के बाल और उस जैसी विभिन्न चीज़ें हैं। और फिर व्यक्तिगत घरेलू पारिवारिक देवता, जैसे उत्पत्ति की पुस्तक में राहेल और लाबान।

राहेल ने घर के देवताओं को चुरा लिया और उन्हें अपने कंबल के नीचे छुपा लिया, जब वह जा रही थी, और लाबान उन्हें लेने के लिए आया। लेकिन ऐसा लगता है कि प्राचीन समाजों में यह

विचार था कि जितना अधिक, उतना बेहतर। तो, योना की किताब में, जब तूफ़ान आता है और जिस नाव में योना है उसके नाविक डर जाते हैं, तो हर कोई अपने-अपने भगवान को पुकारता है।

और इसलिए, यदि यह भगवान उत्तर नहीं देगा, तो शायद यह भगवान काम करेगा, इत्यादि। यदि एक राष्ट्र ने दूसरे राष्ट्र पर विजय प्राप्त कर ली, तो वे विजित लोगों के देवी-देवताओं को अपने सिस्टम में समाहित कर लेंगे, उनके अपने देवता सर्वोच्च देवता होंगे, लेकिन ये अन्य लोग इसका हिस्सा होंगे, इसलिए यह बढ़ जाएगा। वस्तुतः राष्ट्रों के बीच दर्जनों, यहाँ तक कि कुलदेवता, सभी तरह के, कभी-कभी तो सैकड़ों देवी-देवता भी थे।

रिश्ते हमेशा बिल्कुल स्पष्ट नहीं थे, इसलिए कभी-कभी हम बाल और अशेरा को मुख्य पात्रों के रूप में देखते हैं, अशेरा शायद बाल की पत्नी के रूप में, लेकिन अन्य, कनानी ग्रंथों में हमने उल्लेख किया है, अशेरा बाल के पिता, अशेरा की पत्नी है बाल की माँ है। लेकिन वैसे भी, यहाँ, स्पष्ट रूप से, बाइबल, न्यायाधीशों, शमूएल और विशेष रूप से राजाओं की पुस्तकों में एक आवर्ती विषय यह है कि बाल और अशेराह इस्राएलियों के बीच पूजा का केंद्र थे जब वे सच्चे ईश्वर से दूर हो रहे थे। तो, हम इसे यहां देखते हैं।

कुशत्रिंशत्तम के हाथ में बेच दिया , और उन्होंने उसकी सेवा की, उन्होंने भगवान की दोहाई दी, इसलिए भगवान ने ओलीएल को खड़ा किया। पद नौ, यहोवा की आत्मा उस पर थी, और उस ने इस्राएल का न्याय किया, और वह युद्ध करने को निकला, और उन्हें छोड़ा, और इस प्रकार देश को 40 वर्ष तक विश्राम मिला, और तब वह मर गया। तो यह संक्षिप्त कम्पास में है, एक कैप्सूल के रूप में, एक तरह से, फिर से, वह चक्र जिसका हमने उल्लेख किया है, और यह, 12 न्यायाधीशों के चक्र को लॉन्च करने वाले पहले व्यक्ति के रूप में उपयुक्त है, क्योंकि उस तरह का इनमें से अधिकांश समयों में क्या हो रहा था, उसे लघु रूप में दर्शाता है।

हम न्यायाधीशों की अपनी चर्चाओं में प्रभु की आत्मा के बारे में फिर कभी बात करेंगे, लेकिन प्रभु की आत्मा ओथनील, सैमसन और अन्य जैसे लोगों पर आती है, और यह पुराने नियम की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। प्रभु की आत्मा दूसरों पर भी आती है, ताकत के कारनामों के लिए नहीं, बल्कि बोलने को सशक्त बनाने के लिए। इसलिए हम विभिन्न पहलुओं को देखेंगे कि प्रभु की आत्मा लोगों के साथ कैसी है।

तो, श्लोक 12 से 30 में, हमारे पास न्यायाधीशों में से दूसरा है। उसका नाम एहूद है, और उसने इस्राएल को मोआब के राजा एग्लोन से छोड़ा। मोआब पूर्व में, जॉर्डन नदी के पार है।

यह वास्तव में मृत सागर के पूर्व में है, और एहूद, या एग्लोन, इस समय इज़राइल के लिए एक मानक प्रकार का दुश्मन था। मोआबी लूत, अब्राम के भतीजे के वंशज हैं, और इसलिए चचेरे भाइयों के बीच इस तरह का दूर का रिश्ता है, हम कह सकते हैं, और यह एक अलग-अलग रिश्ता है, जैसा कि हमने पेंटाटेच और बाद में देखा है, लेकिन यह है एहूद। एग्लोन के साथ एहूद की कहानी, एहूद इस्राएल का न्यायाधीश था, और एग्लोन मोआबी राजा था, बाइबिल में अधिक ग्राफिक कहानियों में से एक है।

जब मैं सामान्य रूप से हिब्रू कथा की प्रकृति के बारे में व्याख्यान दे रहा होता हूँ तो जिन चीजों के बारे में मैं बात करता हूँ उनमें से एक हिब्रू कथा की विभिन्न विशेषताएं हैं। यह सीधे-सरल अंदाज में कहानियाँ सुनाता है। यह बहुत सारी चीज़ें करता है, लेकिन जो चीज़ें यह करता है उनमें से एक यह है कि यह अक्सर चीज़ों को बहुत यथार्थवादी अंदाज़ में प्रस्तुत करता है।

आप इसे यहां देखें; आप इसे निश्चित रूप से 1 और 2 शमूएल की पुस्तकों में देखते हैं। 1 और 2 सैमुअल इतिहास में लगभग 100 वर्षों का वर्णन करते हैं। उन दो किताबों में 55 अध्याय हैं, और इसलिए आप कल्पना कर सकते हैं कि 1 और 2 सैमुअल की किताबें डेविड के जीवन, शाऊल के जीवन के बारे में बहुत विस्तार से बताती हैं।

कभी-कभी यह लगभग प्रतिदिन या यहां तक कि घंटे-दर-घंटे की चर्चा होती है। इसके विपरीत, उदाहरण के लिए, 1 और 2 राजाओं की पुस्तकें छोटी हैं। इनकी लंबाई 47 अध्याय हैं, और ये लगभग 400 वर्षों को कवर करते हैं।

तो, आप देख सकते हैं कि किंग्स का लेखक जिस तरह से अपनी कहानियाँ प्रस्तुत करता है, वह बहुत व्यापक ब्रश के साथ पेंटिंग करता है। पूरे इतिहास में विभिन्न राजाओं के बारे में चर्चा करने में वह कहीं अधिक संक्षिप्त और कहीं अधिक सूत्रबद्ध हैं। लेकिन 1 और 2 सैमुअल में, महान यथार्थवाद और महान विवरण है, और हम देखते हैं कि एहूद और एग्लोन की कहानी में भी यही दिखाया गया है।

अतः एहूद बिन्यामीनी है। यह पता चला कि वह बाएँ हाथ का है, जो कहानी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस्राएली, पद 15, मोआब के राजा एग्लोन को श्रद्धांजलि भेज रहे हैं।

वे मूलतः उसे कर चुका रहे हैं। और इसलिए, एहूद इसे लेने वाला नहीं है, और वह चीजों को अपने हाथों में लेने का फैसला करता है, सचमुच, और वह खुद को भेष बदल देता है, खुद को तैयार करता है, अपने कपड़ों के नीचे एक तलवार छिपाता है, आता है, और श्रद्धांजलि देने का नाटक करता है। लेकिन वह चीजों को व्यवस्थित करता है ताकि जब उसका काम पूरा हो जाए और नौकर चले जाएं, तो वह राजा के साथ कक्ष में वापस आए, राजा के करीब आए और अपने बाएँ हाथ से जोर लगाए।

अब, राजा उम्मीद कर रहा होगा कि अधिकांश लोग दाएँ हाथ से काम करेंगे और यह उम्मीद करेंगे कि हमला दाएँ हाथ से होगा, इसलिए जब बाएँ हाथ से हमला होता है, तो यह राजा के लिए आश्चर्य की बात है। और मैं कभी नहीं जानता कि यहां जो कुछ होता है उसका वर्णन मुझे पसंद है या नापसंद, लेकिन श्लोक 21 और 22 में, हमारे पास महान यथार्थवाद है, और आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या आधुनिक समय में इसका वीडियोटेप किया जा रहा था, इस पर कोई फिल्म बनाई जा रही थी या कोई फिल्म बनाई जा रही थी। टेलीविजन शो, कि कैमरा अंदर फोकस करेगा, और खून, और खून, और आंत, इत्यादि। लेकिन श्लोक 21 कहता है, एहूद ने अपने बाएँ हाथ से बढ़कर, अपनी दाहिनी जाँघ से तलवार निकाली, और उसे अपने पेट में, अर्थात् एग्लोन के पेट में घुसा दिया, और मूठ ब्लेड के पीछे घुस गई।

चर्बी ब्लेड के ऊपर बंद हो गई क्योंकि उसने तलवार को पेट से बाहर नहीं निकाला, और गोबर बाहर आ गया, कूड़ा बाहर आ गया। तो, यह एक खूनी, गंदा, गंदा दृश्य है। और मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब निकाला जाए।

ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक, हमें उस स्तर का विवरण देकर शायद चाहता है कि हम उससे आनंदित हों। निश्चित रूप से यह इसराइल के दुश्मन के पतन को दर्शाता है। लेकिन मुझे यह भी लगता है कि एक ऐसी भावना है जिसमें लेखक, जब वे इस तरह का विवरण प्रस्तुत करते हैं, तो बस एक तरह से कह रहे होते हैं, मैं इसे नहीं बना रहा हूँ।

यहाँ विवरण हैं। मैं सिर्फ एक सामान्यीकृत तस्वीर नहीं दे रहा हूँ, बल्कि यह वास्तव में हुआ है, और यहाँ इसके लिए समर्थन है। तो नौकरों को समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है।

उनका राजा अभी भी कमरे में बंद है, और अंततः, वे अंदर जाते हैं और उसे ढूँढते हैं, और एहुद भाग जाता है। और इसलिए, मोआब, श्लोक 30 का अंत। श्लोक 29, उन्होंने लगभग 10,000 मोआबियों को मार डाला, और फिर मोआब को अपने अधीन कर लिया गया, और भूमि को अब 80 वर्षों तक आराम मिला।

तो, भूमि के विश्राम के ये सूत्र हैं, 40 वर्ष, 80 वर्ष। तीसरे न्यायाधीश का नाम शमगर है और हम उसके बारे में केवल एक श्लोक में पढ़ते हैं। अब, आप जो विद्वान पढ़ते हैं या जिस टिप्पणी को आप देखते हैं, उसके आधार पर, कभी-कभी शमगर को छोटे न्यायाधीशों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया जाता है क्योंकि वह केवल एक कविता में होता है।

अन्य लोग उन्हें प्रमुख न्यायाधीशों में से एक के रूप में रखेंगे क्योंकि आपके पास उनके सैन्य रूप से एक नेता होने की कहानी है। मैं उन्हें प्रमुख न्यायाधीशों के साथ रखूंगा, भले ही हमारे पास केवल एक श्लोक है। तो, यह कहता है, वह अनात का पुत्र शमगर था, जिसने एक बैल-बकरी के साथ 600 पलिशितियों को मार डाला, और उसने भी इस्राएल को बचाया।

हम उसके बारे में इतना ही जानते हैं, लेकिन यह एक बहुत प्रभावशाली उपलब्धि है। हम नहीं जानते कि यह सब एक ही समय में हुआ या कुछ दिनों या हफ्तों की अवधि में, लेकिन अंतिम परिणाम यही है। यह स्पष्ट रूप से बाद में सैमसन की कहानियों का पूर्ववलोकन करता है, जिसने पलिशितियों की तुलना में अधिक लोगों को मार डाला और उसके पास अडाची का जबड़ा भी था।

उसके पास एक बैल-बकरी थी, परन्तु उसने इस्राएल को बचाया। तो, एक तिहाई न्यायाधीश, इसलिए न्यायाधीशों की पहली तीन कहानियाँ उन न्यायाधीशों की हैं जो परिणामों के संदर्भ में काफी सकारात्मक हैं, और हम वास्तव में इन न्यायाधीशों के बारे में बहुत सारी नकारात्मक बातें नहीं पढ़ते हैं। जब तक आप अध्याय तीन में एहुद की साजिशों से विचलित नहीं हो जाते, उन्हें काफी अच्छी तरह से प्रस्तुत किया गया है।

इसलिए, हम यहाँ पहले तीन अध्यायों के अंत में रुकेंगे, और हम बाद में डेबोरा और बेरिक की कहानियों को जारी रखेंगे।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 24 है, न्यायाधीश 1-3, ओथनील, एहुद और शामगर।